DCI-1901030401020001 Seat No. _____

B. A. (Sem. II) (CBCS) (W.E.F.-2019) Examination

July – 2022

Hindi *(Compulsory)*

(Adhunik Hindi Kavya : Panchvati Evam Vyakaran) (Anivary)

(New Course)

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना :

(१) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।

(२) प्रश्नों के अंक दाहिनी ओर दर्शाये हैं ।

१ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व का परिचय दीजिए । १४

अथवा

१ खण्डकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'पंचवटी' का मूल्यांकन कीजिए । १४

२ 'पंचवटी' काव्य के आधार पर राम का चरित्र–चित्रण कीजिए । १४

अथवा

२ भावपक्ष और कलापक्ष की दृष्टि से 'पंचवटी' काव्य का मूल्यांकन कीजिए । १४

३ 'पंचवटी' काव्य का कथासार लिखकर उसका उद्देश्य स्पष्ट कीजिए । १४

अथवा

३ 'पंचवटी' काव्य के आधार पर सीता के चरित्र का चित्रण कीजिए । १४

४ टिप्पणियाँ लिखिए : (किन्हीं **दो**) १४

(१) 'पंचवटी' काव्य में प्रकृति–चित्रण ।

(२) 'पंचवटी' काव्य की संवाद–योजना ।

(३) 'पंचवटी' काव्य की भाषा–शैली ।

(४) 'पंचवटी' में गुप्तजी की नारी–भावना ।

५ सूचनानुसार उत्तर लिखिए :

(अ) निम्नलिखित पद्य का पल्लवन कीजिए : ७

(१) समय ही संपत्ति है ।

अथवा

(१) मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।

(ब) निम्नलिखित गद्यांश का संक्षेपण कीजिए : ७

(१) प्रकृति हमें स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाती है । पक्षी और जानवर अपने बच्चों को तभी तक पालते है, जब तक वे अशक्त रहते हैं । पक्षी के बच्चे जब उड़ने लगते हैं, तब वे उन्हें छोड़ देते है । बच्चों को अपना भोजन आप ढूँढना पड़ता है । सुधरे हुए देशों में भी यही बात है । बच्चों के ऊपर माँ–बाप की देखभाल तभी तक रहती है, जब तक वे विद्यार्थी–जीवन में हैं । उसके बाद वे स्वतंत्र हो जाते हैं और अपना भार आप संभाल लेते है ।

अथवा

(१) मेरी समझ में केवल मनोरंजन काव्य का साध्य नहीं है । कविता पढ़ते समय मनोरंजन अवश्य होता है, पर उसके उपरान्त कुछ और भी होता है । मनोरंजन करना कविता का प्रधान गुण है । जिससे वह मनुष्य के चित्त को अपना प्रभाव जमाने के लिए वश में किये रहती है, उसे इधर–उधर जाने नहीं देती । यहि कारण है कि नीति और धर्म–सम्बन्धी उपदेश चित्त पर वैसा प्रभाव नहीं जमा सकते । जैसा कि काव्य या उपन्यास से निकली हुई शिक्षा असर करती है । कविता अपनी मनोरंजन–शक्ति द्वारा पढ़ने या सुनने वाले का चित्त उचटने नहीं देती उसके हृदय के मर्म–स्थानों का स्पर्श करती है और सृष्टि में मानवी गुणों का प्रसार करती है ।